मैं.....(संख्या) शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र के लिए सहयोग राशि दे रहा/रही हूँ। इसका विवरण है:

नाम .....

मकान नं. ..... मोहल्ला .....

डाकघर .....शहर.....

ज़िला.....

प्रदेश..... पिन .....

फोन/मोबाइल नं. .....

ई-मेल .....

चेक/ड्राफ्ट नं. .....राशि .....

(शब्दों में .....)

तारीख ..... हस्ताक्षर.....

बैंक ..... शाखा..... शहर.....

आपसे सहयोग की अपेक्षा

एकलव्य ने इस कार्यक्रम को विगत 15 वर्षों के दौरान सर रतन टाटा ट्रस्ट तथा एक्सिस बैंक फाउंडेशन, मुंबई व विभा फाउंडेशन के वित्तीय सहयोग से विकसित किया है। मध्य प्रदेश के पाँच ज़िलों - होशंगाबाद, उज्जैन, बैतूल, हरदा और देवास में अब तक लगभग 120 गाँवों में, 180 केन्द्रों के माध्यम से 5,000 बच्चों के साथ काम हुआ है। अब हम इसे डिमास्ट्रेशन मॉडल की तरह से रखते हुए अन्य इलाकों में फैलाना चाहते हैं। साथ ही माध्यमिक शाला (कक्षा 6 से 8) तक बढ़ाने के प्रयोग भी करना चाहते हैं।

इसके लिए हम आपसे सहयोग का आग्रह करते हैं। केन्द्र के संचालन में आने वाले खर्च का विवरण इस प्रकार है:

यदि आप 30,000 रु. का सहयोग साल भर देते हैं तो 35 बच्चों को एक केन्द्र के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है।

10 केन्द्रों के संचालन में एक साल का लगभग 3 लाख 50,000 रु. खर्च आता है। इसमें से लगभग 50,000 रु. समुदाय से जुटाए जा सकते हैं।

एक क्षेत्र में कम से कम 10 शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों का संचालन व्यवहारिक है क्योंकि इससे अकादमिक प्रबन्धन व मॉनिटरिंग में मदद मिलती है।

अपना सहयोग *एकलव्य* के नाम बने चेक, ड्राफ्ट (या हमसे संपर्क कर ऑनलाइन) भी दे सकते हैं।

कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानने के लिए कृपया हमारी वेबसाइट देखें **www.eklavya.in**

हमारा पता है

एकलव्य, E-4/12 अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म.प्र.)

टेलिफोन नंबर- 0755 - 246 3380

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र

ग्रामीण बच्चों को स्कूलों से जोड़ने में मदद करें

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र मध्य प्रदेश में एकलव्य संस्था द्वारा समुदाय के सहयोग से संचालित एक कार्यक्रम है। इस प्रयास के तहत ग्रामीण और आदिवासी बहुल क्षेत्रों में 6-11 आयु वर्ग के बच्चों को सरकारी प्राथमिक विद्यालयों से जोड़ने, नियमित पढ़ाई जारी रखने तथा उनके पढ़ने-सीखने की क्षमता बढ़ाने में मदद की जाती है।

अपने वर्षों के अनुभव से हमने सीखा है कि समुदाय को उनके बच्चों की शिक्षा की प्रक्रिया में शामिल करने में काफी समय लगता है। खासकर वे वंचित समुदाय जैसे कि अनुसूचित जनजाति, दलित, पिछड़े वर्ग आदि। या खासकर वे जिनकी पहली पीढ़ी स्कूल आ रही हो। हालांकि यह बच्चों के शैक्षणिक स्थिति सुधारने का प्रयास है, फिर भी उल्लेखनीय है कि यह केन्द्र कोई टयूशन सेंटर नहीं हैं।

केन्द्र कैसे संचालित होता है?

- शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र लगभग दो घंटे के लिए स्कूल समय के पहले या बाद में चलाया जाता है।
- एक केन्द्र में पहली से पाँचवी कक्षा तक के 25 से 35 विद्यार्थी पढ़ने आते हैं।
- समुदाय द्वारा चुने गए स्थानीय 9-12वीं पास युवक/युवती द्वारा इसको संचालित किया जाता है।
- केन्द्र समुदाय द्वारा दी गयी जगह या गाँव में स्थित सरकारी प्राइमरी स्कूल में चलाया जाता है।
- एड्व लव्य द्वारा हर केन्द्र में कहानी किताबें, कविता पोस्टर, सह शिक्षण सामग्री जैसे कि पिटारा कार्ड, गणित माला, चार्ट तथा कलर पेंसिल, क्रेयॉन, क्राफ्ट/चार्ट पेपर आदि सामग्री एक स्टील ट्रंक में दी जाती है।
- केन्द्र में पढ़ाने वालों का प्रशिक्षण एकलव्य द्वारा किया जाता है। इसमें क्या पढ़ाना है, कैसे पढ़ाना है के साथ-साथ बच्चों का सतत आकलन और शिक्षण योजना बनाना सिखाया है। केन्द्र, बच्चों व संचालकों की नियमित मॉनिटरिंग एकलव्य की देखरेख में होती है।
- केन्द्र लगाने का स्थान, समय, बैठक व्यवस्था आदि की जिम्मेदारी समुदाय द्वारा निभाई जाती है।
- केन्द्र में प्रतिदिन भाषा व गणित का बुनियादी शिक्षण रोचक गतिविधियों तथा सह-शिक्षण सामग्री जैसे कि सामूहिक गीत, कविता, खेल, क्राफ्ट, कहानी-कविता की किताबें, बातचीत द्वारा होता है।
- यहाँ बच्चों को स्थानीय या उनकी मातृभाषा में पढ़ाया-समझाया जाता है। इससे सीखने का वातावरण सहज और रूचिकर हो जाता है तथा बच्चों के अनुभवों और सरोकार को कक्षा में जगह मिलती है।
- यहाँ प्रत्येक बच्चे को उसकी कक्षा (एक से पाँचवी) की बजाय उसके शिक्षण स्तर का आकलन करके (ए, बी या सी) समूह में रखा जाता है। हर समूह के शिक्षण और आकलन करने का ढाँचा एकलव्य द्वारा विकसित किया गया है।

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र के प्रभाव

- नियमित आने वाले बच्चे लगभग तीन महीनों में सरल वाक्य लिखना व पढ़ना सीख लेते हैं।
- लगभग सालभर में किताबें और बाल अखबार बनाना, कहानी व दिनचर्या लिखना, संख्या की पहचान, जोड़-घटाना व एक अंक का गुणा करना सीख लेते हैं।
- समुदाय के लोग जान पाते हैं कि उनके बच्चे के सीखने की गति व स्तर क्या है क्योंकि बच्चों की आकलन शीट कक्षा में ऐसी जगह लगाई जाती है जहाँ समुदाय का हर व्यक्ति इसे देख सकता है। हर महीने पालक मीटिंग में इसे उनके साथ साझा भी किया जाता है।
- बच्चों की उपलब्धि समुदाय में शिक्षा की अहमियत के अलावा इस बात की प्रेरणा जगाती है कि वे उन्हें नियमित स्कूल भेजें। हम जिन क्षेत्रों में काम कर रहे हैं, उनमें कुछ स्कूलों में बच्चों के आत्मविश्वास कक्षा में भागीदारी व नियमित उपस्थिति में सकारात्मक बदलाव आया है।
- बच्चों के शैक्षिक स्तर में आए शैक्षिक बदलाव के फलस्वरूप सरकारी स्कूल के शिक्षकों का जुड़ाव शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र से बनता है।
- बच्चों के माता-पिता की जागरूकता भी बढ़ी है वे अब पालक तथा स्कूल के **SMC** मीटिंग में प्रबन्धन के अलावा बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि व समस्याओं पर भी चर्चा करते हैं।
- हाल के वर्षों में बच्चों को पढ़ाने का काम करने के साथ-साथ लगभग सभी केन्द्र संचालकों ने खुद की शिक्षा भी आगे बढ़ाई है। कुछ ने प्राइवेट या पत्राचार द्वारा 10वीं या 12वीं तो कुछेक ने डी.एड. या ग्रेजुएशन भी किया है। एकलव्य की ओर से भी न केवल इसके लिए उनको प्रोत्साहित किया जाता है बल्कि रविवार या अन्य अवकाश दिनों में शिक्षण सहयोग भी दिया जाता है।